चतुर्थ अध्याय

''प्रसाद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय''

महान साहित्यकार जयशंकर प्रसाद की साहित्य सेवा से हिन्दी साहित्य धन्य हुआ है। प्रसाद का रचना संसार काफी विस्तृत है। उन्होने अपने काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि रचनाओं द्वारा पाठकों की साहित्य-क्षुधा को तृप्त करने का प्रयास किया और वह इस दृष्टि से सफल साहित्यकार माने जाते है।

उपन्यासकार जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों पर जब हम नजर डालते है, तो हमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि प्रसाद की उपन्यास रचनाएँ विपुल नहीं है। वह हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में केवल सवा-दो उपन्यास लेकर अवतरित हुए, किन्तु इन्ही उपन्यासों ने हिन्दी उपन्यास साहित्य जगत में अपना एक इतिहास बनाया। प्रसाद के कंकाल (सन् 1929), तितली (सन् 1934), इरावती (अधूरा सन् 1935) इन उपन्यासों को पढ़कर पाठक उनके प्रति गौरव और आदर को वृद्धिंगत करते हैं। प्रसाद ने 'कंकाल' उपन्यास में सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत कर पाठकों को सोचने के लिए मजबूर किया है। 'तितली' उपन्यास ग्राम-सुधार को बढ़ावा देने में सफल रहा है तथा 'इरावती' उपन्यास में प्रसाद की प्रतिभा शैली पुनः इतिहास में खोई नजर आती है। इस बेजोड़ रचना की परिसमाप्ति होने से पहले ही प्रसाद हमें और इस साहित्य संसार को छोड़कर चले गए।

4.1 **'कंकाल' उपन्यास की कथावस्तु**

श्रेष्ठ साहित्यकार जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी साहित्य को तीन अद्वितिय उपन्यास प्रदान किए। इनमें 'कंकाल' यह सन् 1929 में प्रकाशित प्रथम उपन्यास है। 'कंकाल' उपन्यास यर्थाथवादी परंपरा का निर्वाह करता है। 'कंकाल' का शब्दगत अर्थ है - 'हड्डियों का ढाँचा'। यह केवल नर कंकाल नहीं है बल्कि समाज व्यवस्था की मरणोन्मुख स्थिति है, जो विक्राल रूप से आज हमारे सामने मौजूद है। प्रसाद ने 'कंकाल' में 'मानव-

जीवन' के यथार्थ रूप को चित्रित किया है। आदर्शवाद के पक्षधर प्रसाद ने समाज में व्याप्त विसंगतियों को 'कंकाल' में स्पष्ट रूप से रखा है। प्रसाद ने मनुष्य के विकास में रोड़ा बननेवाले धर्म तथा समाज के कृत्रिम मूल्यों के बंधन 'कंकाल' में तोड़ डाले हैं। प्रसाद ने समाज में व्याप्त धर्म या जाति-व्यवस्था की विकृतियों को हटाकर 'मानवता' को एकमात्र श्रेष्ठ धर्म समझा है। ''प्रसाद के प्रशांत आनन को देखकर यह अनुमान लगाना कठिन है कि वे 'कंकाल' के विद्रोही कलाकार भी हो सकते हैं। उनके हृदय की भारतीयों को धर्म दृष्टि से उदार तथा समाज दृष्टि से समतावादी देखने की प्रबल स्पृहा 'कंकाल' में व्यापक रूप से व्यक्त हुआ है।''[1]

अतः 'कंकाल' उपन्यास की कथावस्तु संक्षेप में इस प्रकार है - श्रीचन्द्र और किशोरी सन्तान प्राप्ति के लिए अनेक बार तीर्थयात्राएँ कर चुके हैं। श्रीचन्द्र अमृतसर का धनिक व्यापारी है; जिसे अपनी पत्नी से ज्यादा अपने पैसों से प्यार है। एक तीर्थयात्रा के दौरान किशोरी की मुलाकात अपने बालसखा निरंजन से होती है। निरंजन आज मठाधिश बन गया है। किशोरी और निरंजन एक दूसरे के प्रति आकर्षण को आज भी महसूस करते है। निरंजन भी अध्यात्म को भूलकर एक साधारण इन्सान की तरह किशोरी की आराधना करने लगता है। किशोरी निरंजन को अपना सर्वस्व अर्पित करती है।

श्रीचन्द्र अपनी पत्नी के व्यवहार से आहत होकर अमृतसर चला जाता है। हरिद्वार में निरंजन और किशोरी का प्यार परवान चढ़ने लगाता है। किशोरी अपने साथ एक असह्य विधवा रामा को रख लेती है। श्रीचन्द्र कुछ दिनों के पश्चात् किशोरी को लेने आता है। दोनों का आपसी मनमुटाव दूर होता है। किशोरी श्रीचन्द्र के साथ अमृतसर चली जाती है। किशोरी के जाने के पश्चात् विधवा रामा निरंजन की शिकार हो जाती है।

पन्द्रह साल बित गए। काशी में चंद्र ग्रहण था। ग्रहण नहाने के लिए घाट पर बड़ी भीड़ उमड़ पड़ी थी। विधवा रामा अब सधवा होकर अपनी कन्या तारा के साथ काशी आई थी। रामा अब भण्डारी के साथ रहती है। तारा भीड़ में फँसकर अपने परिवार से बिछड़ जाती है। कुटनी के हाथ लगी तारा वेश्या बना दी जाती है और 'गुलेनार' नाम से जानी जाती है।

काशी में स्वयंसेवक मंगल ने तारा को कुटनी के चक्कर में फँसते देखा था मगर संकोच के कारण उसे बचा न सका। मंगल की लखनऊ में गुलेनार से मुलाकात होती है। मंगल मन ही मन तारा से प्रेम करने लगता है। अतः वह तारा (गुलेनार) को अम्मा के चंगुल से मुक्त करने की योजना बनाता है। तारा पूर्वनियोजन के अनुसार मंगल के साथ भाग जाती है। मंगल तारा को वापस घर लौट जाने को कहता है; मगर तारा के पिता उसे अस्वीकार करते है। तारा मंगल के सहारे हरिद्वार में रहने लगती है। दोनों आर्य समाज के वातावरण में अपना जीवन बिताने लगते हैं। मंगल और तारा दोनों विवाह के बंधन में बंधने वाले थे, मगर तारा की चाची के बातों में आकर मंगल तारा तथा उसकी माँ के चरित्र पर सवाल उठाकर, शादीवाले दिन ही भाग जाता है। मंगल के

धोके से आहत गर्भवती तारा कुछ दिन चाची के पास रहती है। लेकिन चाची भी कुछ दिनों के बाद तारा को घर से बाहर निकालती है। तारा कई बार आत्महत्या की कोशिश करती है। वह अपने दुःखपूर्ण जीवन से निजात पाकर सुख से मरना चाहती है। तारा अनेक कष्टपूर्ण हालात से गुजरकर अस्पताल में पुत्र को जन्म देती है। फिर अकेली ही मृत्यु की खोज में निकल पड़ती है।

किशोरी हरिद्वार से जाने के छः मास बाद एक पुत्र को जन्म देती है। इसी कारण किशोरी और श्रीचन्द्र के रिश्ते में दरार पड़ जाती है। किशोरी अपनी सन्तान विजय के साथ काशी में रहने लगती है। श्रीचन्द्र उसे खर्च के रूपये भेजा करता है। किशोरी काशी में भ्रद महिला के रूप में परिचित थी। देवनिरंजन का उसके घर में आना-जाना था। प्रायः किशोरी के यहाँ भण्डारा होता था।

एक दिन स्कूल में किशोरी के पुत्र विजय का मंगल से परिचय होता है। यही परिचय जल्द ही गहरी दोस्ती में बदल जाता है। मंगल अपनी निर्धनता से पीड़ित होकर विजय के घर रहने जाता है।

एक दिन किशोरी के यहाँ भण्डारा था। अछूत, भूखे खाने के पत्तलों पर टूट पड़े थे। तारा भी भूख से पीड़ित होकर वहाँ आती है। अनाथ तारा को किशोरी आश्रय देती है। तारा अब अपने आपको 'यमुना' बताती है।

संयोगवश एक दिन मंगल और तारा का आमने-सामने आते है। मंगल तारा से क्षमा-याचना करने लगता है। तारा मंगल से कहती है - "तारा मर गई मैं उसकी प्रेतात्मा यमुना हूँ।"[2] इन दोनों की बातों को विजय सून लेता है। इस घटना के मानसिक आघात से विजय बिमार पड़ता है।

मंगल यमुना से प्रताड़ित होकर विजय का घर छोड़ देता है। वह वृंदावन के पास आठ बालकों को लेकर ऋषिकुल बनाता है। किशोरी विजय और यमुना के साथ तीर्थयात्रा पर निकल पड़ती है। मंगल ऋषिकुल की सहाय्यता के लिए किशोरी के यहाँ आता है। मगर उसे बिना जलपान करवाये सहाय्यता का वादा करके भेज दिया जाता है। यमुना इस प्रसंग से बड़ी आहत होती है।

एक दिन विजय यमुना के सामने अपने हृदय को खोलता है। वह यमुना को अराध्य मानता है, सर्वस्व मानता है। मगर यमुना विजय से केवल दया पात्री बहन के स्वरूप में अपनाने की बिनती करती है। विजय यौवन के चरम वेग पर था। घण्टी उसको बढ़ावा देने का काम करती है। घण्टी एक बाल विधवा है; जो अपने स्वच्छंद व्यवहार से जानी जाती है। विजय और घण्टी का रिश्ता घनिष्ट होता है। किशोरी विजय के इस बर्ताव के कारण मथुरा छोड़कर काशी जाती है। यमुना भी गोस्वामी कृष्ण शरण के आश्रम में रहने जाती है।

विजय और घण्टी एक दिन तांगे में घूमने निकलते हैं। अचानक उनपर हमला होता हैं, उस हमले में घण्टी घायल हो जाती है। तब विजय पास के ही चर्च का आश्रय लेता है। चर्च के पादरी जान और बाथम इन

दोनों को अपने साथ रखते हैं। घण्टी और विजय की सरला और लतिका से पहचान होती है, जो हिन्दू से इसाई बनी हैं। लतिका बाथम की पत्नी है। एक दिन अन्धे भिखारी से पता चलता है कि घण्टी की माता का नाम नन्दो है। सरला के साथ चर्चा द्वारा विजय को पता चलता है कि सरला ही मंगल की माता है। तथा यहीं पर घण्टी और मंगल का जन्म रहस्य खुलता है।

वृन्दावन के गोस्वामी कृष्णशरण श्रीकृष्ण मंदिर के अध्यक्ष है। यमुना इन्हीं के आश्रम में रहती है। मंगल भी इन्हें अपना गुरू मानता है। एक दिन विजय और घण्टी आश्रम में कृष्ण-कथा सुनने के लिए जाते है। विजय गोस्वामी जी से घण्टी के साथ विवाह करने की अनुमति माँगता है। गोस्वामी जी इनके प्रेम को विवाह बंधन में बँधने की सम्मति देते हैं। तभी वहाँ उपस्थित यमुना बोल उठी - ''विजय बाबू, यह ब्याह आप केवल अहंकार से करने जा रहे हैं, आपका प्रेम घण्टी पर नहीं है।''[3] सभी को यमुना के इस बर्ताव का आश्चर्य होता है। सब लोग वहाँ से चले जाते हैं।

किशोरी निरंजन को लेकर काशी लौट आती है। उसे पुत्र वियोग का दर्द सताने लगता है। इसी वजह से उसमें और निरंजन में झगड़े बढ़ने लगते है। निरंजन इसी कारण किशोरी से अलग होने का फैसला लेता है। इस पर किशोरी कहती है - ''तो रोकता कौन है, जाओ! परन्तु जिसके लिए मैंने सब कुछ खो दिया है, उसे तुम्ही ने मुझसे छिन लिया - उसे देकर आओ।''[4]

निरंजन किशोरी को बिना कुछ कहे चलता बनता है। उसी दिन श्रीचन्द्र अपनी प्रेमिका चन्दा और उसकी पुत्री लाली समेत आ धमकता है। किशोरी और श्रीचन्द्र दोनों आपस में समझौता करते है और सब लोग राजी-खुशी साथ-साथ रहने लगते हैं।

विजय घण्टी के साथ अपने रिश्ते के बारे में सोचता है। विजय को लगता है कि, घण्टी ने संसार के सारे प्रश्नों का हल निकाल लिया है। घण्टी भी विजय के प्रति अपने प्रेम को छोड़ना नहीं चाहती थी; क्योंकि विधवा घण्टी पहले से ही सभी अधिकारों से वंचित है।

एक दिन नौका-विहार के बाद विजय और घण्टी पर हमला होता है। वे लोग घण्टी को भगा के ले जाना चाहते थे। विजय गुस्से में आकर उन गुण्डो में से एक का गला दबा कर मार देता है। वहाँ पर मौजूद बाथम घण्टी को हत्या का डर दिखाकर ले जाता है। यमुना वहाँ स्नान के लिए आई थी, साथ ही निरंजन भी विजय का पिछा करते-करते वहाँ पर पहुँचा था। यमुना इस हत्या की जिम्मेदारी खुद पर लेती है और विजय को भाग जाने के लिए विवश करती हैं।

घण्टी के कारण लतिका और बाथम का संबंध विच्छेद होता है। सरला और लतिका गोस्वामी कृष्णशरण के आश्रम में चली जाती है। घण्टी बाथम के चंगुल में फँस जाती है।

विजय को फतहपुर-सीकरी के जंगल के डाकू बदन गूजर का आसरा मिलता है। उसकी पुत्री गाला एक मुसलमानी स्त्री से उत्पन्न सन्तान है। गाला और विजय की खास जान-पहचान हो जाती है। डाकू बदन गूजर विजय को अपनी बेटी के जीवन-साथी के रूप में चुनता है। विजय गाला के साथ शादी करने से अपनी असमर्थता दर्शाता है; किन्तु स्वाभिमानी गाला भी आश्रित विजय के साथ शादी करने से इन्कार करती है।

मंगल देव उसी जंगल के एक गाव में गूजर बालकों के लिए स्कूल खोलता है। गाला के यहाँ भी उसका आना-जाना है। पढ़ी लिखी गाला स्कूल में बालिकाओं के लिए विभाग खोल कर मंगल को सहयोग देती है।

हत्या के आरोप में फँसी यमुना के खिलाफ न्यायालय में मुकदमा चलता है। निरंजन इस मुकदमे के लिए धन की सहायता करता है।

गोस्वामी कृष्णशरण के आश्रम में मंगल, गाला, यमुना, लतिका, नन्दो, घण्टी, निरंजन आदि मिलकर 'भारत-संघ' की स्थापना करते हैं; जिसका प्रधान उद्‌देश्य सेवाधर्म है।

यमुना मुकदमा जीत जाती है, उसे निर्दोष मुक्त किया जाता है। सरला और मंगल माता-पुत्र मिल जाते हैं। मंगल निरंजन और कृष्णशरण के आशिर्वाद से गाला के साथ ब्याह करता है। यमुना अपने भिखारी भाई विजय को लेकर काशी चली जाती है। लतिका, सरला, घण्टी सभी 'कृष्ण-सेवा' में अपना जीवन बिताने लगती है।

किशोरी को अपने पति श्रीचन्द्र के साथ रहकर भी शान्ति नहीं मिलती। निरंजन किशोरी को खत लिखकर, अपने दूवारा किए गए अपराध की क्षमा-याचना करता है। मोहन किशोरी का दत्तक-पुत्र है। मगर किशोरी मोहन से सन्तुष्ट नहीं है। वह बार-बार विजय की याद मे दुःखी हुई जा रही है। इसी कारण वह रोग-शैय्या पर पड़ी है।

यमुना फिर से किशोरी की सेवा में लग जार्त है। मोहन यमुना की सन्तान है; परन्तु वह उसकी दासी बने रहने में ही अपनी शान्ति पाती है।

विजय भिखारियों के बिच सड़क पर अपना जीवन बिता रहा है। यमुना किशोरी को विजय का अंतिम दर्शन कराने में सफल होती है। जल्द ही किशोरी अपने प्राण त्यागती है।

विजय भूख और कंगाल अवस्था में ही रास्ते पर अपना दम तोड़ देता है। यमुना संघ के स्वयंसेवकों की सहायता से विजय के अंतिम-संस्कार की व्यवस्था करती है।

इस प्रकार उपन्यास का अंत दुःखद हुआ है। उपन्यास में बड़ी भयावहता तथा अतियथार्थता का परिचय होता है। विजय के मृत्यु शोक में शोकाकुल मलिन वसन घुंघट ओढ़ी सिसकियाँ देती यमुना का रूप सारे वातावरण को शोकमय बना देता है।

4.1.1 'कंकाल' उपन्यास की कथागत विशेषताएँ

'कंकाल' उपन्यास की कथावस्तु से परिचित होने पर हमें इसकी कथागत विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई देती है जो निम्नलिखित है -

4.1.1.1 शुद्ध भारतीयता में डूबा 'कंकाल'

प्रसाद कालीन साहित्यिक परिवेश पर पाश्चात्य प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। फिर भी प्रसाद ने भारतीय विशेषताओं को बरकरार रखते हुए उपन्यास में 'भारतीय' परिवेश का सफल चित्रांकन किया है। प्रसाद ने 'कंकाल' उपन्यास में धार्मिक स्थलों का वर्णन किया है, जिनमें हरिद्वार, काशी, वृंदावन, अमृतसर आदि शहर आते हैं। इन धार्मिक स्थानों में फैले अनाचार का यथार्थ चित्रण 'कंकाल' में आया है। प्रसाद "तत्कालीन भारत की सारी दुर्बलताओं और विषमताओं को लेकर उपस्थित हुए है। इसमें उन्होने परिवर्तित जीवन-दृष्टि और युग जीवन की छवि को दर्शाया है।"[5] 'कंकाल' की कथा में तत्कालीन भारतीय जीवन का यथार्थ रूप दिखाई देता है।

4.1.1.2 सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति की बिगुल ध्वनि

'कंकाल' उपन्यास में आधुनिक व्यक्ति और समाज का अद्भुत संमिश्रण दिखाई देता है। इसमें व्यक्ति समाज की कठोर धार्मिक अराजकता का विरोध और विद्रोह करता दिखाई देता है। समाज के परम्परागत रूढ़ि-बन्धनों को तोड़कर व्यक्ति और विचार स्वतंत्रता की माँग करता है। व्यक्तिवाद के समर्थक प्रसाद समाज में स्थित किसी भी संस्था, प्रणाली या अवस्था पर विश्वास नहीं रखते हैं। "क्या 'कंकाल' में यह अंतर्ध्वनित नहीं होता कि धर्म मरता हुआ प्रत्यय है, वह हाशिये पर आती हुई सच्चाई है। धर्म अब अनैतिक या सद्गुणों का स्रोत नहीं रह गया है। धर्म पर टिका हुआ समाज जर्जर है। इस समाज में आमूल-चूल परिवर्तन किये बिना नया समाज निर्मित नहीं हो सकता।"[6] उपन्यास में स्थित विजय, मंगल, गाला आदि पात्रों की मदद से प्रसाद ने क्रान्ति का बिगुल बजाया है और सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में मानो क्रान्ति लाने का प्रयास ही किया है। 'कंकाल' के अधिकांश पात्र परंपरा का विरोध करते है, परिस्थिति से विद्रोह करते हुए अपनी इच्छा के अनुसार जीने का प्रयास करते है। चाहे स्त्री पात्र हो या पुरुष पात्र, हर पात्र एक नई तान खिंचता दिखाई देता है।

4.1.1.3 स्त्री-पुरुष संबंध पर प्रकाश

प्रसाद ने 'कंकाल' उपन्यास में एक ओर स्वार्थांध पुरुष प्रवृत्ति की आलोचना की है तो दूसरी ओर नारी

पात्रों को प्रेममयी रूप में चित्रित किया है। प्रसाद ने नारी की मूल प्रवृत्ति प्रेम देने में संतोष माननेवाली, प्रेम के बदले प्रेम की अपेक्षा रखनेवाली, प्रेम के बदले में कुछ न मिलनेपर भी निराश न होनेवाली आदि नारी का चित्रण यथार्थ रूप में किया है। नारी ''जिस पुरुष को हृदय से चाहती है, उसके लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है और बदले में कुछ नहीं माँगती, केवल प्रेम का विश्वास माँगती है। और जब उसे वह भी नहीं मिलता, तो भी उसके प्रेम में शिथिलता नहीं आती क्योंकि नारी के लिए प्रेम करना न केवल मूलगत स्वभाव है, बल्कि उसकी नियति है।''[7] प्रसाद ने किशोरी, तारा, मंगल, निरंजन, विजय, घण्टी आदि पात्रों द्वारा परम्परागत प्रेम को एक नया मोड़ देने का प्रयास किया है। इन पात्रों के चित्रण में प्रसाद का दृष्टिकोण अलग है।

4.1.1.4 व्यक्ति स्वतंत्रता की माँग

प्रसाद हमेशा व्यक्ति स्वातंत्र्य के पक्षधर रहे हैं। इसके लिए वे सामाजिक और धार्मिक स्थिरता को अत्यावश्यक समझते है। धर्म और समाज की झाड़ और झाँकर में फँसा इन्सान अस्तित्त्वहीन, असहाय्य होकर छटपटा रहा है; उसी विवशता से मुक्ति पाने के लिए उसका स्वातंत्रता की माँग करना सहज ही है। हिन्दु-मुस्लिम-ईसाई आदि धर्म मानवकृत ही है। धार्मिकता की आराजकता के तले मनुष्य की पशुवृत्ति जागृत हो रही है। स्त्री-पुरुष का एक दूसरे के प्रति आकर्षण सहज है किन्तु इस सत्य को जानते हुए भी समाज आज भी व्यक्ति को दण्डित करता है। ''सदियों से धर्म के ठेकेदारों ने अपने वर्ग-स्वार्थ में धार्मिक पाखंड द्वारा मानवीय शोषण करके उन्हें हीन बना दिया है। उन्हे मानवाधिकार से वंचित कर दिया है।''[8] प्रसाद 'घण्टी', 'गाला' आदि नारी-पात्रों को समाज के विरोध में खड़ा कर व्यक्ति स्वातंत्र्य की माँग को बढ़ावा देते हैं।

4.1.1.5 हिन्दू-स्त्री का मार्मिक चित्रण

'कंकाल' उपन्यास में नारी चित्रण अत्यंत मार्मिक बन पड़ा है। यहाँ पर स्त्री अपने अस्तित्त्व की खोज में छटपटाती नजर आती है। इस छटपटाहट में हर बार उसका सामना उसके पारंपारिक शत्रु-पुरुष से होता है। पुरुष प्रधान संस्कृति ने आज भी स्त्री को अधिकारों से वंचित रखा है। उपन्यास में प्रखरता से उपस्थित होनेवाला मुद्दा है 'स्त्री-पुरुष असमानता'। उपन्यास में पुरुष धार्मिकता के बहाने या सामाजिक प्रतिष्ठा को बरकरार रखने के लिए हर बार स्त्री को ही बलि चढ़ाया है। उसका अस्तित्त्व मात्र 'जननी' बनकर रह गया है। ''हिन्दु-समाज के विधि-नियम स्त्री से इस बात की अपेक्षा करते है कि वह अपने 'पति' का हुक्म हर बात में मानेगी, और समाज का कोई कानून नहीं है जो उसके प्रति अन्याय किए जाने की स्थिति में उसकी रक्षा कर सकता हो।''[9] स्त्री चाहे किसी भी जाती या धर्म की हो उसके हालात अब भी हमें सोचने के लिए मजबूर करते है। प्रसाद ने किशोरी,

तारा, घण्टी, लतिका, सरला आदि पात्रों के द्वारा हिन्दू स्त्री की व्यथा को ही वाणी दी है।

4.1.1.6 'वर्णसंकर' समस्या पर गहरा चिंतन

'कंकाल' उपन्यास में समाज की बड़ी समस्या 'वर्णसंकर समस्या' पर सूक्ष्मता से चिंतन किया गया है। उपन्यास के विजय, तारा, मंगल आदि पात्र जारज है। वे अपनी जारजता का कलंक लिए हुए सारी जिन्दगी संघर्ष करते रहते है। अनेक पात्र अनैतिक आचरण का शिकार हो जाते है। प्रसाद ने आधुनिक समाज के गिरते हुए स्तर पर प्रकाश डाला है। आज की पीढ़ी भावना में बहकर अनैतिक आचरण करती है और उसके परिणामस्वरूप 'वर्णसंकरता' प्राप्त करती है। प्रसाद मनुष्य के अनैतिक आचरण पर बल देते हुए आचरण की शुध्दता पर जोर देते है।

4.1.1.7 नवजागरण की आवाज

प्रसाद आज की पीढ़ी को नवजागरण की ओर ले जाने में कामयाब हुए है। उपन्यास में विजय, मंगल आदि पात्र सामाजिक असंगतियों, धार्मिक और आर्थिक असमानता के विरोध में अपनी आवाज उठाते नजर आते हैं। आज की पीढ़ी समाज में फैली गंदगी को निकल बाहर करने में जुट गई है। आज की नारी भी अपने हक और अधिकार के प्रति सजग हो गई है। उसे भी आम आदमी की तरह स्वतंत्रता और समानता प्राप्ति का पूरा हक है। ''कंकाल' के लेखक का प्रयोजन प्रचलित समाज, उनके विश्वासों, उसकी कार्य-प्रणालियों और उसके अनर्थकारी बन्धनों (चाहे वे प्रत्यक्ष हों, मानसिक हों अथवा संस्कार-रूप में ही हों) के विरूद्ध जबर्दस्त प्रोपेगण्डा करना है।''[10] 'कंकाल' उपन्यास 'नवजागरण' की प्रेरणा को जगाने वाला जागरण युग का एक अद्वितीय उपन्यास कहा जा सकता है। इस उपन्यास में 'विजय' का चरित्र इसका प्रतिक मात्र कहा जाएगा।

निष्कर्ष

'कंकाल' प्रसाद का यथार्थवादी उपन्यास है। इस उपन्यास दूवारा लेखक सामान्य आदमी तक पहुँचकर, उसकी छटपटाहट, उसका आक्रंदन, उसके विद्रोही रूप को यथार्थपूर्ण तथा भावपूर्ण न्याय देने में सफल रहे है। 'कंकाल' उपन्यास द्वारा समाज में फैले आडम्बर पर, धर्मांध वृत्ति पर, साथ ही समाज की कुरीति, परंपरावादी दृष्टि पर तीखा व्यंग्य कसा है। 'कंकाल' में अनेक महान पात्रों की सृष्टि हुई है जो अपने कर्तव्य का पूरी न्यायप्रियता से निर्वाह करते है; भले ही इस उपन्यास की कथावस्तु घटना प्रधान हो। फिर भी कथा दूवारा समाज में स्थित जाति-वर्ण-रक्त की मर्यादाओं और रूढ़ियों के प्रति विद्रोह का प्रचार करने में प्रसाद सफल रहे हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'कंकाल' उपन्यास का श्रेष्ठ स्थान है; जो प्रसाद की सशक्त रचनावली है।

''प्रगतिशील ओजमय विचारों की काव्य लड़ियाँ 'कंकाल' में यत्रतत्र फैली हैं, उनके संगठन से प्रसाद के महान व्यक्तित्व का पता चल जाता है और हम सभी उनकी शक्तिशाली प्रतिभा के कायल हो जाते हैं, पर कानों में जैसे धीरे से कोई कह जाता है - 'काश कि 'कंकाल' भी काव्य होता ?' ''[11]

4.2 *'तितली' उपन्यास की कथावस्तु*

साहित्यकार जयशंकर प्रसाद लिखित 'तितली' यह सन् 1934 में प्रकाशित दूसरा उपन्यास है। प्रसाद ने यह उपन्यास अपने अभिन्न सखा स्व. विनोद शंकर व्यास को समर्पित किया है। प्रसाद ने इस उपन्यास में ग्राम-जीवन का चित्रण किया है। इस उपन्यास का नामकरण उपन्यास की नायिका 'तितली' के नाम से किया है। 'तितली' यह यथार्थवादी उपन्यास है; जिसमें प्रसाद ने ग्राम्य जीवन की समस्या और उसके कारण होनेवाली पीड़ा का वास्तविक और करूणाजनक चित्रण किया है। इस कृति द्वारा प्रसाद ने ग्रामीण जीवन में जनजागण कर व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया है। यह उपन्यास व्यक्तिवादी चेतना तथा व्यक्ति स्वातंत्र्यता की प्रवृत्ति को गौरवान्वित करता है। 'तितली' उपन्यास की कथावस्तु संक्षेप में इस प्रकार है -

'तितली' उपन्यास में प्रसाद ने एक गाँव का चित्र खिंचा है। इस उपन्यास में घटना केन्द्र है 'धामपुर' तथा उसकी बंजर भूमि। इस बंजरिया में बाबा रामनाथ बंजो (तितली) के साथ रहते है। बन्जो बाबाजी की पौष्या पुत्री है। बाबाजी संस्कृत के विद्वान और क्रान्तिकारी है। वह बन्जो को संवत् 55 के अकाल की कहानी सुनाने जा रहे थे कि एकदम से बंदुक चलने की आवाज आती है। बन्जो बाहर आकर देखती है कि शिकारियों का एक समुदाय सुर्खाब के शिकार के लिए आया था। उनमें से चौबे जी का अपघात वश घुटना टूट जाता है। इसलिए मदद के लिए इन्द्रदेव और शैला बन्जो के पास आते है। चौबे जी को झोपड़ी में छोड़कर दोनों छावनी लौट जाते है। चौबे जी से बाबा को पता चलता है कि इंद्रदेव धामपुर के जमींदार हैं। बन्जो शैला से प्रभावित हो जाती है, उससे मित्रता करने की तीव्र इच्छा उसमें जगती है।

जमींदार इंद्रदेव के पिता को राजा की उपाधि मिली थी। इन्द्रदेव बी.ए. की पढ़ाई खत्म करके बॅरिस्टरी की तालीम हासिल करने इंग्लैन्ड चले जाते है। विलायत में उनकी शैला से जान-पहचान होती है। शैला अनाथ तथा अत्यंत दरिद्र स्थिति में इंग्लैन्ड की सड़कों पर भिख माँगती थी। इंद्रदेव शैला की स्थिति पर दया खाकर उसे अपने साथ रखते है। इंद्रदेव के साथ रहकर शैला के मन में भारतवर्ष के प्रति आकर्षण पैदा होता है। इंद्रदेव अपनी पढ़ाई पूरी करके शैला को अपने साथ भारत लेकर आते हैं।

शैला भारत में इंद्रदेव के साथ छावनी पर रहती है। इंद्रदेव की माता श्यामदुलारी एक भद्र हिन्दु महिला है। वह अपने कुल के रीति-रिवाजों का तथा धर्म का कठोरता से पालन करने में विश्वास रखती हैं। उसके

तबीयत की देखभाल के लिए अनवरी को रखा जाता है। अनवरी इंद्रदेव पर आसक्त हैं; इसी कारण वह शैला से जलती है। श्यामदुलारी इंद्रदेव को दुःश्चरित्र का समझती है, क्योंकि वह एक विदेशी स्त्री के साथ रहता है। श्यामदुलारी अपने बेटे को पथभ्रष्ट समझकर उसके साये से भी दूर रहती है। श्यामदुलारी अपनी बेटी माधुरी के साथ धामपुर आई है। उसका इरादा इंद्रदेव को सुधारना था। माधुरी अपने बेटे कृष्णमोहन के साथ माता की देखभाल के लिए मायके रहती है। माधुरी का पति श्यामलाल एक ऐय्याश किस्म का चरित्रहीन आदमी है।

मधुबन बाबा रामनाथ का प्रिय शिष्य था। वह गरीबी के कारण आज दाने-दाने को मोहताज है। रूपयों के आभाव में उसकी फसल बरबाद हो रही है। वह बाबा रामनाथ के छोटे-मोटे काम कर देता था। मधुबन और तितली दोनों बालसहचर थे।

शैला श्यामदुलारी से मिलती है। वह अपने स्वभाव माधुर्य से श्यामदुलारी का दिल जीत लेती है। यही बात माधुरी को खलती है। उसपर अनवरी भी माधुरी को शैला के खिलाफ भड़काती है। माधुरी अपने भाई इंद्रदेव के विरोध में योजना बनाती है। इंद्रदेव का पूरा परिवार इन षड्यंत्रों के कारण बिखर जाता है।

मधुबन के पिता मुकद्दमे में अपना सब कुछ गवाँ देते है और जायदाद के रूप में शेरकोट का खंडहर उसे सौंप जाते हैं। पिता के देहान्त के बाद बड़ी विधवा बहन राजकुमारी ने मधुबन को सँभाला। राजकुमारी का ससुराल सम्पन्न था मगर भाई के देखभाल के लिए वह मायके आती है। मधुबन का सामान्यों की तरह खेतों में हल चलाना उसे पसंद नहीं।

तहसीलदार बनजरिया को हथियाना चाहता है। मगर बाबा रामनाथ इंद्रदेव को सफाई देते हैं कि बनजरिया उन्हें कृष्णार्पण में मिली है तो उसपर लगान कैसा ? फिर बाबा रामनाथ इंद्रदेव को अपनी कहानी सुनाते है। नील कोठी का मालिक एक अंग्रेज बार्टली साहब था। वह अपनी बहन जेन के साथ रहता था। बार्टली का काफी रुपया भारतीय किसानों में फँसा था। इसीलिए वह इंग्लैन्ड नहीं जा पा रहा था। इसी बार्टली का पैसा चुकाने के लिए देवनन्दन की भू-सम्पत्ति निलाम हो गई थी। देवनंदन का पूरा परिवार रास्ते पर आ गया था। संवत् 55 के अकाल में देवनन्दन रामनाथ को तितली सौंप कर मर जाता है। तितली यह दिल दहलाने वाली कहानी सुनते हुए मुर्च्छित हो जाती है।

एक दिन शैला मधुबन के साथ नील कोठी देखकर आती है। नील कोठी को देखकर उसे अपनी माता जेन के बीताये सुखी दिनों की याद आती है। बाद में आगे आकर शैला नील कोठी में ही अपने सामाजिक कार्य की शुरूवात करती है।

इन्द्रदेव पारिवारिक टकराहट के बिच अपने और शैला के रिश्ते के बारे में सोचते हैं। इंद्रदेव के परिवारवाले शैला को वेश्या से अधिक समझने की कल्पना नहीं कर सकते है। शैला बाबा रामनाथ से हितोपदेश

का अध्ययन करती है। शैला पाश्चात्य वातावरण में बढ़ी होने के कारण वह अपने व्यक्ति स्वातंत्र्य के प्रति जागृत है। वह इंद्रदेव पर निर्भर न रहकर अलग रहकर अपनी पहचान बनाना चाहती है।

अनवरी, माधुरी और चौबे मिलकर इंद्रदेव और तितली के विवाह का षड्यंत्र रचते हैं। चौबे राजकुमारी को अपने साथ शामिल कर लेता है। वास्तव में मधुबन और तितली दोनों विवाह करना चाहते हैं। कारण राजकुमारी और मधुबन के रिश्ते में दरार पैदा होती है। चौबे राजकुमारी के अकेलेपन का फायदा उठाकर उसके साथ जबर्दस्ती करने की कोशिश करता है। इस घटना से राजकुमारी का स्त्रीत्व जागृत होता है।

माधुरी का पती श्यामलाल धामपुर आता है। आते ही उसने पूरे गाँव की स्त्रियों पर अपनी वासनामयी दृष्टि डालनी शुरू कर दी। वह कहारीन मलिया पर भी जबर्दस्ती करने की कोशिश करता है। अनवरी के साथ वह अनैतिक संबंध रखता है और उसे लेकर कलकत्ता भाग जाता है। इस घटना से माधुरी घोर निराश हो जाती है। माधुरी का मनोबल बढ़ाने में शैला बहुत मदद करती है। श्यामदुलारी को भी शैला की अच्छाई पर यकीन होता है।

शैला के मन में देहाती लोगों के प्रति सहानुभूति निर्माण हो गई है। शैला की दृष्टि से ग्रामीण लोगों में जीवन जीने की सच्चाई दिखाई देती है; जिसमें वह अपने मेहनत से, विश्वास से और सन्तोष से हँसी-खुशी जीवन जीते हैं। शैला नील कोठी में बैंक, अस्पताल, पाठशाला आदि खोलकर जनसेवा में अपना जीवन व्यतीत करना चाहती है। शैला अब ग्रामीण वातावरण में पूरी तरह से रंग गई है।

बाबा रामदेव तितली और मधुबन की शादी कराना चाहते थे। मगर राजकुमारी इस विवाह के विरोध में खड़ी होती है। माधुरी, चौबे, अनवरी यह इंद्रदेव को शैला से अलग करना चाहते हैं। वे लोग इंद्रदेव का विवाह किसी दुसरी लड़की से कराना चाहते थे। फिर भी इतने विरोध के बावजूद बाबा रामनाथ मधुबन और तितली का विवाह कराते हैं। उसी दिन शैला भी हिन्दू धर्म की दीक्षा लेती है।

इन्द्रदेव गृह कलह से तंग आकर सब कुछ छोड़-छाड़कर बनारस आते है। वहाँ पर अपनी बॅरिस्टरी शुरू कर देते हैं। इंद्रदेव के धामपुर छोड़ने पर तहसीलदार का अत्याचार बढ़ जाता है। तहसीलदार बनजरिया और शेरकोट लगान में हथिया जाता है। एक दिन राजकुमारी महन्त के पास कुछ पैसे उधार माँगने आई थी। महन्त पैसे के बदले राजकुमारी के स्त्रीत्व का सौदा करता है। महन्त राजकुमारी पर जबरदस्ती करने ही वाला होता है इतने में मधुबन वहाँ पर पहुँचता है। वह महन्त का गला घोंट कर उसे मार देता है। महन्त का खून करके मधुबन कलकत्ता भाग जाता है। कलकत्ते में रामदीन के साथ लोको विभाग में कोयला झौंकने की नौकरी करता है। कलकत्ते में वह गिरहकट एक वीरू बाबू की चंगुल में फँस जाते हैं। उन्हें रिक्शा चलाने का काम करना पड़ता है। एक दिन मधुबन के रिक्शे में श्यामलाल और अनवरी बैठते हैं। मधुबन इन दोनों को पहचानता है। मधुबन

उन दोनों को रिक्शे से गिरा देता है और श्यामलाल को बूरी तरह पिटने लगता है। परन्तु अन्त में मधुबन महन्त की हत्या के जुर्म में पकड़ा जाता है और उसे दस साल की सजा हो जाती है।

तितली मधुबन के छोड़ जाने के बाद बड़ी वीरता और साहस के साथ बंजरिया की देखभाल करती है। तितली एक बेटे को जन्म देती है, जिसका नाम मोहन है। तितली राजकुमारी के साथ अपने बेटे मोहन का पालन-पोषण करती है। श्यामलाल के माधुर्री को छोड़ जाने के बाद श्यामदुलारी माधुरी के नाम अपनी सारी जायदाद करना चाहती है। इसी सिलसिले में वह बनारस जाती है। कोलकत्ते में इंद्रदेव और शेला विवाह बंधन में बंध जाते हैं। शैला के पिता भारत में धामपुर पहुँचकर जनसेवा में शैला का हाथ बँटाते हैं।

मधुबन को अच्छे व्यवहार के कारण दो वर्ष पहले ही जेल से रिहा किया जाता है। संयोग से मधुबन आनन्द मेले में पहुँच जाता है। वहाँ पर अपघात से तहसीलदार, मैना, सूखदेव चौबे हाथी द्वारा कुचले जाते है। तितली परिवार के साथ-साथ अनाथ बच्चों की सेवा में 14 साल तपस्या करते हुए बिताती है। मोहन अपने पिता की याद में छटपटाने लगता है। एक दिन रामजस तितली को मधुबन के लौट आने की खबर देता है। इतने सालों से दबा हुआ संयम का बाँध टूट जाता है और तितली मधुबन की याद में विव्हल हो जाती है। अपने बेटे द्वारा शक किए जाने पर तितली गंगा की गोद में चले जाने का निर्णय करती हैं, इतने में ''सामने एक चिरपरिचित मूर्ति जीवनयुद्ध का थका हुआ मधुबन विश्राम शिबिर के द्वार पर खड़ा था।''[12] 14 साल की कड़ी तपश्चर्या के बाद तितली और मधुबन का मिलन होता है। इस तरह 'तितली' की कथा का सुखान्त होता है।

4.2.1 'तितली' उपन्यास की कथागत विशेषताएँ

'तितली' उपन्यास की कथावस्तु जानने पर हमें उसकी कथागत विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई देती है। जो निम्नलिखित हैं -

4.2.1.1 सफल ग्रामचित्रण

'तितली' प्रसाद का ग्रामीण जीवन पर आधारित उपन्यास है। प्रसाद ने इस उपन्यास में ग्राम जीवन का सफल चित्रण प्रस्तुत किया है। ''तितली के जीवन में ग्राम से सम्बन्ध रखनेवाली अनेक विषम परिस्थितियाँ, जमींदार व तहसीलदार की चतुराई, ग्रामीण जनता की निर्धनता और सरलता, स्वार्थपरता और दुर्बलता पर भी यथेष्ट प्रकाश पड़ा है।''[13] साथ ही इस उपन्यास में सामन्तीय वातावरण का रोचक चित्रण हुआ है। मधुबन का शेरकोट का किला, बनजरिया आदि का वर्णन, खेत-खलिहानों के लिए लड़ते किसान, भूमिहीन किसानों की दयनीय स्थिति आदि घटनाओं के माध्यम से ग्रामीण परिवेश को चित्रित करने में प्रसाद सफल हुए है।

4.2.1.2 सामन्तीय व्यवस्था का चित्रण

प्रसाद ने 'तितली' उपन्यास में मुख्य रूप से सामन्तीय व्यवस्था का चित्रण किया है। 'तितली' उपन्यास में जमींदार एवं उनके द्वारा किया जानेवाला शोषण, अन्याय, अत्याचार को दर्शाया है। महन्त सूदखोरी करके किसानों की जमीन हथियाना चाहता है। तहसीलदार लगान के बदले मधुबन को जमीन से बेदखल कर देता है। इन लोगों से न केवल किसान, गरीबों को खतरा है; बल्कि गाँव की बहू-बेटियों की इज्जत भी खतरे में है। महन्त राजकुमारी पर अत्याचार करने की कोशिश करता है। माधुरी का पति श्यामलाल मलिया की इज्जत पर हाथ डालता है। मधुबन शैला को रमुआ की दर्दनाक कहानी सुनाता है - रमुआ ब्याह के लिए दस रूपये का कर्जा लेता है; इसका सूद चुकाते-चुकाते मर जाता है। इसका बेटा भी सूद चुकाते पूरी जिंदगी बिता देता है। मगर उसका बेटा इस चक्कर में न फँसकर गाव छोड़कर भाग जाता है। किसान की पूरी जिंदगी जमींदार लोगों का सूद देने में ही घिसते-घिसते खत्म हो जाती है। इस तरह प्रसाद ने सामन्तीय व्यवस्था में भ्रष्टाचार, अनाचार दीमक की तरह फैल रहा है तथा सामन्तीय व्यवस्था अपना पुराना वैभव खो बैठी है। इसका वास्तव चित्रण उपलब्धि किया है।

4.2.1.3 गांधीवादी – विचारधारा का प्रभाव

प्रसाद ने 'तितली' उपन्यास में ग्रामसुधार को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। गांधी जी के गांधीवाद से प्रभावित होने से प्रसाद के ग्रामोन्मुखी दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। 'तितली' में प्रसाद गाँव छोड़कर जानेवाले लोगों पर टीकास्त्र चलाते है। उनका कहना है कि गाँव के पढ़े-लिखें लोगों को एकत्रित होकर ग्रामसुधार के लिए विविध सुविधाओं एवं योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए। प्रसाद अपने उपन्यास में गाँव में सर्वांगीण विकास की आवश्यकता को देखकर 'आदर्श गाँव' के निर्माण के लिए प्रयत्नशील रहते है। प्रसाद ने इस उपन्यास में तितली, शैला, इन्ददेव आदि पात्रों के माध्यम से समाज-सेवा तथा ग्राम-विकास का कार्य करवाया है।

4.2.1.4 भारतीय संस्कृति की महत्ता का बखान

प्रसाद भारतीय संस्कृति के पुजारी रहे हैं। इनके काव्य, नाटक, निबंध आदि विधाओं में 'भारतीय संस्कृति' की झलक हमें देखने को मिलती है। 'तितली' उपन्यास में भी प्रसाद ने भारतीय संस्कृति की महत्ता का बखान किया है। उपन्यास में शैला पाश्चात्य संस्कृति का प्रतीक है, फिर भी उसे भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण है। वह बाबा रामनाथ जी से हितोपदेश पढ़ती है साथ ही आध्यात्मिक चर्चाएँ भी करती है। ''प्रसाद के मन में प्रायः आग्रह बना रहा है कि विदेशी युवतियाँ उच्च आदर्शों के कारण भारत की ओर आकृष्ट होती हैं,

क्योंकि जो निष्ठा, प्रेम और समर्पण का भाव वे यहाँ पाती हैं पश्चिमी संस्कृति में वह सब संभव नहीं है।''[14] पाश्चात्य युवती शैला हिन्दू-धर्म की दीक्षा लेती है। इसीसे पता चलता है कि हमारी भारतीय-संस्कृति श्रेष्ठ हैं। 'तितली' उपन्यास में बाबा रामनाथ एवं तितली ये पात्र आदर्श भारतीय संस्कृति के संवाहक हैं।

4.2.1.5 सामाजिक विषमता का प्रभावी चित्रण

प्रसाद ने 'तितली' उपन्यास में सामाजिक विषमता पर चिंता जताई है। उपन्यास में सामाजिक विषमता से प्रायः सभी पात्र प्रभावित हैं। उसमें जमींदार वर्ग कृषक वर्ग पर अत्याचार करता है; तो महन्त लोग भी साधारण आदमी को ठगते है। उपन्यास का पात्र रामजस दिन-रात एक करके भी अपने माँ और भाई के इलाज का बंदोबस्त नहीं कर सकता। समाज में श्रेष्ठ समझे जाने वाले महन्त अपने धार्मिक तथा अध्यात्मिक कर्तव्य को भूलकर, समाज में अनाचार फैला रहे है। मधुबन की बहन राजकुमारी की लाचारी का फायदा उठाकर महन्त उसके साथ जबर्दस्ती करने की कोशिश करता है। माधुरी का पति श्यामलाल हर एक स्त्री को वासना से भरी नजरों से देखता है और कहारिन मलिया पर अत्याचार करने की कोशिश करता है। प्रसाद ने 'तितली' में हर वर्ग का वास्तविक चित्रण पेश करके सामाजिक विषमता की ओर सबका ध्यान खिंचा है। समाज की यथार्थ स्थिति का चित्रण हुआ है।

4.2.1.6 पारिवारिक विघटन का वास्तव चित्रण

प्रसाद आधुनिक भारतीय समाज में उपस्थित पारिवारिक विघटन के विक्राल रूप को जान गए थे। वह खुद भी अपने पारिवारिक समस्याओं से त्रस्त थे। 'तितली' उपन्यास में प्रसाद ने जमींदार इंद्रदेव के संयुक्त परिवार का चित्रण किया है। इंद्रदेव की बहन माधुरी विलासी पति से तंग आकर अपने बेटे के साथ मायके चली आई है। माधुरी अपने भाई इंद्रदेव की सम्पत्ति हड़पना चाहती है। इसके लिए वह चौबे, अनवरी, राजकुमारी समेत इंद्रदेव के विरोध में षड्‌यंत्र रचती है। माधुरी माता श्यामदुलारी और इंद्रदेव के बिच असामंजस्य निर्माण कर दोनों में दूरी निर्माण करने में सफल होती है। इंद्रदेव इस गृह-कलह से तंग आकर घर-कारोबार छोड़ बनारस चले जाते है। इस तरह इंद्रदेव के संयुक्त-परिवार के विघटन को चित्रित कर प्रसाद पारिवारिक समस्या को उठाने में सफल हुए है। 'तितली' में प्रसाद 'संयुक्त परिवार' की जर्जर स्थिति उपस्थित करने में सफल रहे हैं।

4.2.1.7 अन्तर्जातीय विवाह तथा प्रेम-विवाह को स्वीकृति

प्रसाद आधुनिक विचार के प्रणेता रहे हैं। उन्होंने अपने साहित्य में सुधारवादी दृष्टिकोण पर बल दिया है। प्रसाद मानवी जीवन में 'प्रेम' की महत्ता को स्वीकृत करते है। प्रसाद ने इस उपन्यास में शैला-इंद्रदेव का

अन्तर्जातीय विवाह तथा तितली-मधुबन का प्रेमविवाह कराया है। ''भारतीय संस्कृति के पुजारी प्रसाद ने 'तितली' में अन्तर्जातीय विवाह तथा प्रेम-विवाह पद्धति का प्रतिपादन किया है।''[15] तितली में प्रसाद की प्रगतिशील विचारधारा के दर्शन होते है।

निष्कर्ष

'तितली' यह प्रसाद का ग्रामोन्मुखी उपन्यास है। उपन्यास में ग्राम-परिवेश को प्रस्तुत करने में प्रसाद सफल नजर आते है। 'तितली' उपन्यास में प्रसाद ने जमींदार लोगों की खोखली वृत्ति, स्त्री के स्वाभाविक रूप, समाज सेवा द्वारा समाज-कल्याण का तथा ईसाई और हिन्दू संस्कृति के संमिश्रण का वास्तविक चित्रण किया है। प्रसाद ने पात्रों के माध्यम से ग्राम-सेवा एवं शिक्षा के प्रचार से नवनिर्माण की लहर उठाई है। नारी-जागृति तथा ग्रामोत्थान के लिए आंदोलन करके समाज में फैले अंधकार को मिटाकर आशा एवं आत्मविश्वास फैलाना ही प्रसाद के 'तितली' का रचना धर्म है।

तात्पर्य 'तितली' उपन्यास में ग्रामीण जीवन का, परिवेश का, वातावरण का, रोजमर्रा की जिंदगी का, आधुनिकता के प्रभाव का यथार्थ चित्रण स्पष्ट दिखाई देता है। इसीलिए 'तितली' उपन्यास सफल उपन्यास माना जाता है।

4.3 *'इरावती' उपन्यास की कथावस्तु*

सामाजिक रचना संसार में स्वच्छंद विहार करने के बाद प्रसाद 'इरावती' में अपनी मूल प्रवृत्ति 'ऐतिहासिक'ता की ओर संप्रेषित हो गए थे। 'इरावती' प्रसाद का अंतिम एवं अपरिसमाप्त उपन्यास है। कहा जाता है कि हर साहित्य को या कला को अपूर्ति का कोई न कोई शाप लगा है, ''भारत में प्रवाद है कि बाण-की कादम्बरी अपरिसमाप्त ही रह गई थी। अन्त में उनके पुत्र ने उसे पुरा किया। एक किवदन्ती के अनुसार चन्द भी गजनी जाने से पूर्व रासो को अपने पुत्र जल्हण के हाथ सौंप गये थे - पुस्तक जल्हण हात्थ दै चले गज्जन नृप-काज''[16] किसी भी अपूर्ण रचना की कथावस्तु को पूरी तरह समझकर प्रस्तुत करना साहसिक कार्य कहा जाएगा। फिर भी प्रसाद की लेखनी से अवतिर्ण हुए 107 पृष्ठों को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि भवन का बाहरी दृश्य इतना मनोहारी है, तो भितरी दृश्य कितना गज़ब ढ़ा सकता है।

भारत के स्वर्णिम इतिहास में रममाण होनेवाले प्रसाद ने स्कंदगुप्त, चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु आदि नाटकों की रचना कर अपना 'इतिहास प्रेम' सिद्ध किया है। प्रसाद ने 'इरावती' लिखकर उपन्यास विधा को अमूल्य भेंट देने की कोशिश की है। हमेशा ही उनके मन में ऐतिहासिक उपन्यास की सृष्टि करने का विचार था।

''सालवती' कहानी लिखते समय उनके सम्मुख जो अध्ययन की सामग्री थी, वही सामग्री इरावती की आधार भूमि है।''[17]

'इरावती' उपन्यास की कथावस्तु इतिहास के प्रसिद्ध शुंगकाल को जीवित करती है। इस उपन्यास में मौर्य साम्राज्य के अधःपतन को दर्शाया गया है। मगध राजगद्दी पर सम्राट शतधनुष के पुत्र बृहस्पति मित्र आरूढ थे। मौर्य सम्राट, महानायक अशोक का नाम और कीर्ति पूर्णतः लुप्त होने की कगार पर थी, साथ ही बौद्ध धर्म में बढ़ते अनाचार के कारण वह भी अपना स्थान खोने लगा था। दूसरी ओर ब्राह्मण अपना महत्त्व प्रस्थापित करने में जूट गए थे। पूरा मौर्य साम्राज्य परकीय आक्रमणों के आतंक से भयभीत था तथा मगध साम्राज्य के सभी मंत्री गण भी असंतुष्ट थे।

मौर्य सेनापति कान्यकुब्ज के मरणोपरान्त पुष्पमित्र पदारूढ़ हुए। उनका कुलपुत्र अग्निमित्र अपने असफल प्रेम से आहत होकर निराशामय जीवन जी रहा था। इसी कारण पुष्पमित्र ने अग्निमित्र के पराक्रम को जागृत करने के लिए सम्राट खारवेल के विरूद्ध छिड़ी लड़ाई में उसे महानायक बनाया था। कलिंग चक्रवर्ती खारवेल के साथ बृहस्पति मित्र ने संधी कर ली थी। पूरे पाटलीपुत्र पर आतंक की छाया मंडरा रही थी। समाज के हर वर्ग पर इसका प्रभाव सहज दिखाई दे रहा था; विशेष कर धनिक वर्ग में भगदड़ मची हुई थी। सभी लोग अपने जानो-माल के संरक्षण के लिए आसरा खोज रहे थे। यह स्थिति 'इरावती' उपन्यास की कथावस्तु की राजकीय पार्श्वभूमि को दर्शाती है।

'इरावती' उपन्यास की कथा के अंतरंग को छूने पर हमें पता चलता है कि इस उपन्यास का केंद्रिय पात्र 'इरावती' है। इरावती पाटलीपुत्र की नगर नर्तकी थी। मौर्य साम्राज्य के सेनापती पुष्पमित्र का पुत्र अग्निमित्र इरावती से प्रेम करता है। मगर इन दोनों का प्रेम असफल हो जाता है; इसके कारण इरावती उज्जयनी के महाकाल मन्दिर की देवदासी हो जाती है। मगध सम्राट बृहस्पति मित्र पहले से ही इरावती को पाना चाहते थे। एक दिन महाकाल मंदिर में देवदासी इरावती अपने नृत्य साधना में डूबी हुई थी; तभी बृहस्पति मित्र नृत्य में विघ्न डालकर इरावती को बंदी बनाने का आदेश देते हैं। अग्निमित्र इसका विरोध करना चाहता था; परन्तु इरावती स्वयम् बन्दी होना चाहती है। इरावती को बन्दी बनाकर बौद्ध विहार में भेज दिया जाता है।

भिक्षुणी इरावती एक दिन पूनम की रात को पूरनमांसी चाँद के मोह से मोहित होकर नृत्य करती हैं, जो संघ के नियमों के खिलाफ है, अतः नियम उल्लंघन के अपराध में उसे विहार से निकला दिया जाता है। इधर इरावती की यादों में खोया हुआ अग्निमित्र एक दिन नैया खेता हुआ विहार की ओर आता है। अग्निमित्र को आता देख इरावती नदी नें कूद जाती है। इरावती अग्निमित्र के साथ विहार छोड़कर जाना चाहती है किंतु मगध सैनिकों द्वारा दोनों बंदी बनाए जाते है।

इरावती बौद्ध विराह में रहकर बौद्ध धर्म के पाखण्डमयी जीवन से तंग आ गई थी। इसलिए इरावती बौद्ध विहार त्यागकर कालिन्दी के आश्रय में चली जाती है। मगर वहाँ पर भी वह सुख से नहीं रह पाती, उसे दूबारा सैनिकों द्वारा बन्दी बनाकर बृहस्पति मित्र के अंतःपुर में पहुँचा दिया जाता है।

मगध साम्राज्य पर उन दिनों आक्रमण का भय फैला था। मगध के पड़ोसी शत्रु राज्य कलिंग तथा गांधार दोनों से मौर्य साम्राज्य को खतरा था। मौर्य सेनापति पुष्पमित्र ने अपने पुत्र को कारागृह से मुक्त कराके खारवेल के विरोध में जंग में महानायक बना दिया। उसी दौरान एक दिन गंगाधर मंदिर में अग्निमित्र का परिचय कालिन्दी से होता है। प्रथमतः कालिन्दी एक सामान्य परिचारिका के रूप में उपस्थित होती है। मात्र कालिन्दी नंद वंश की कन्या है, जिसे सम्राट शतधनुष ने अपने अंतःपुर में रखा था। शतधनुष की मृत्यु के उपरान्त कालिन्दी बदले की आग में झुलसने लगती है। कालिन्दी मौर्य साम्राज्य को अपना शत्रु समझती है। मौर्य साम्राज्य के विनाश के लिए वह 'स्वस्तिक दल' की स्थापना करती है। वह इस षड्यंत्र में अग्निमित्र का साथ चाहती है। अग्निमित्र की सहायता से नंदराज की निधि की कुंजी हासिल करने में सफल होती है। कालिन्दी बृहस्पति मित्र के कैद में फँसी इरावती को छुड़ाकर, उसके शील की रक्षा करती है।

धनदत्त पाटलीपुत्र का धनिक व्यापारी है, जो विदेश से अभी-अभी लौटा है। उसके पास एक से एक नायाब रत्नों का भण्डार है। उसकी पत्नी का नाम मणिमाला है। मणिमाला अत्यंत सुस्वरूप, सुस्वभावी एवं धार्मिक स्वभाववाली स्त्री हैं। पाटलीपुत्र में सभी साम्राज्य विरोधी सत्ताएँ एकत्र होती हैं। धनदत्त के यहां खारवेल, अग्निमित्र, कालिन्दी, इरावती आदि का सम्मिलन होता है। खारवेल धनदत्त के यहाँ रत्न खरीदने आता है, मगर कालिन्दी के षड्यंत्र में वह फँस जाता है। सभी विरोधी शक्तियाँ एकत्रित होकर मगध साम्राज्य के विरोध में खड़ी होती है। मगध पर फैली इस आतंकित स्थिति का चित्रण करते हुए उपन्यासकार कथावस्तु अपनी चरमावस्था तक पहुँचती हैं, औत्सुक्य जागृति होती है किंतु दुर्भाग्यवश प्रसाद की लेखनी थम गई हैं और उपन्यास की कथावस्तु अधूरी रह गई है। प्रसाद भाग्य के हाथों में फँस गए है और हिंदी का एक सफल श्रेष्ठ बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार इस दुनिया से सदा के लिए चला जाता है। तथा " 'इरावती' भी पूर्ण नहीं हो पाई।... वह इसे काफी बड़ा लिखने वाले थे। अभी तो इस उपन्यास की भूमिका ही नहीं बँध पाई थी।"[18]

'इरावती' उपन्यास की आधारभूमि इतिहास है। इसमें प्रसाद ने पुराण, काव्य, शास्त्र, बौद्ध-जैन साहित्य तथा शिलालेखों की मदद ली है। इसके पात्र बृहस्पतिमित्र, पुष्पमित्र, अग्निमित्र, खारवेल आदि पात्र अपनी ऐतिहासिक पहचान रखते है। कालिन्दी, इरावती, मणिमाला, धनदत्त आदि काल्पनिक पात्रों को प्रसाद ने जीवित रूप दिया है। "इरावती एक अति सुंदर, कलापूर्ण इतिहास की काल्पनिक सृष्टि बनने जा रही थी, जिसमें इतिहास-प्रिय पाठक को इतिहास का यथार्थ चित्रण मिलता और कलाप्रिय पाठक या आलोचक को वे

रोमांटिक तत्त्व भी मिलते-जिनसे कोई कृति स्वच्छन्दतावादी कही जाती है।''[19]

4.3.1 'इरावती' उपन्यास की कथागत विशेषताएँ

'इरावती' उपन्यास की कथावस्तु से परिचित होने पर हमें कथागत विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई देती है। जो निम्नलिखित हैं -

4.3.1.1 स्वर्णयुग का अवतरण

प्रसाद इतिहास के सच्चे प्रेमी कहे जाते है। उनके इतिहास प्रेम को उनके साहित्य में सहज देखा जा सकता है। प्रसाद ने अपने साहित्य में भारतीय संस्कृति तथा उसके स्वर्णिम इतिहास को पूरी श्रद्धा के साथ प्रस्तुत किया है। प्रसाद के उपन्यास भारतीय आदर्शों एवं मान्यताओं से भरे पड़े है। उनके उपन्यास भारतीय संस्कृति के सच्चे रक्षक और संवाहक की भूमिका अदा करते है। वर्तमान कालीन संस्कृतिहीन वृत्ति, अराजकता तथा आधुनिकीकरण में न फँसकर प्रसाद ने 'इरावती' में 'भारतीय संस्कृति' के अपने आकर्षण को उजागर किया है। ''भारतीय संस्कृति के प्रति उनके तीव्र आकर्षण का ही यह परिणाम या कि वर्तमान भारतीय जीवन को 'कंकाल' और 'तितली' में प्रस्तुत करने के बाद 'इरावती' में वे पुनः इस संस्कृति के स्वर्णयुग की ओर लौट गये।''[20] 'इरावती' उपन्यास में प्रसाद ने स्वर्णयुग का अवतरण किया है। प्रसाद ने इसमें इतिहास प्रसिद्ध मौर्य काल, शुंगकाल तथा बौद्ध धर्म की स्थिति को सफलता से चित्रित किया है।

4.3.1.2 ऐतिहासिक प्रणय गाथा

भारतीय साहित्य में प्रणय गाथाओं को केंद्रित कर अनेक कथाएँ लिखि गई हैं। जिनमें पृथ्वीराज-संयोगिता, हरिशचन्द्र-तारामती, अकबर-जोधा, सलिम-नूरजहाँ, शहाजहाँ-मुमताज आदि सुप्रसिद्ध गाथाएँ कहीं जाती है। 'इरावती' भी एक अधूरी प्रणय-गाथा है। जिसमें मौर्य सेनापती 'पुष्पमित्र' के पुत्र 'अग्निमित्र' तथा पाटलीपुत्र की नगर-नर्तकी 'इरावती' की प्रणयगाथा को प्रसाद ने बड़ी रोचकता से प्रस्तुत किया है। 'अग्निमित्र' यह एक ऐतिहासिक पात्र है, ''शुंगवश (दे.) के संस्थापक पुष्यमित्र का पुत्र, जो 149 ई. पूर्व में अपने पिता का उत्तराधिकारी बना।''[21] 'इरावती' यह संपूर्ण काल्पनिक पात्र है। प्रसाद ने अपनी कल्पना शक्ति के बलपर 'अग्निमित्र-इरावती' के इस प्रणय-गाथा का निर्माण किया है। अभी तो इसकी कथा का चित्रांकन पूर्ण हुआ था; उनमें रंग भरना बाकी था; तभी दुर्देव से विधाता ने प्रसाद को ही हमसे छिन लिया। अन्य सुप्रसिध्द प्रणय-गाथाओं की तरह 'इरावती' भी प्रसिध्द होती, परंतु 'इरावती' की यह ऐतिहासिक प्रणय-गाथा अधूरी ही रह गई।

4.3.1.3 इतिहास में डूबी हुई भाव-पीठिका

" 'इरावती' में अतीत सभ्यता के सफल चित्रकार प्रसाद को दृश्य चित्र उपस्थित करनेवाली परिपृष्ट प्रतिभा का परिचय देने का अधिक सुयोग प्राप्त हुआ है, क्योंकि वह ऐतिहासिक उपन्यास है।"[22] प्रसाद 'इरावती' उपन्यास में इतिहास प्रसिद्ध सम्राट अशोक के मौर्य वंश के पतन की कहानी दर्शाते है। सम्राट अशोक के निधन के बाद सारा साम्राज्य अराजकता में डूब जाता है। सम्राट अशोक के फैलाये हुए बौद्ध धर्म में अनैतिकता का प्रादुर्भाव होता है और पूरा धर्म पतन की कगार पर पहुँच जाता है। जिस धर्म ने अहिंसा को अपना मुख्य लक्ष्य माना, वहीं पर कुमार अमात्य हिंसा को ही अपना शस्त्र समझते है; पूरी मानवता ही खतरे में आ गई है। 'इरावती' उपन्यास की संपूर्ण कथावस्तु में भोग-विलास में लिप्त सम्राट, महाविहार में फैली हुई अनैतिकता तथा भिक्षुणियों की असुरक्षित स्थिति आदि का प्रसाद ने वास्तव अंकन किया है। उपन्यास की पूरी पृष्ठभूमि ऐतिहासिकता में डूबी हुई है।

4.3.1.4 गांधीवादी आदर्श

बीसवीं सदी के प्रारंभिक दशकों से महात्ना गांधी तथा उनके विचारों ने संपूर्ण भारतीय जनता को प्रभावित किया था, अतः वह काल खंड 'महात्मा गांधी युग' के नाम से जाना जाता है। गांधी ने अपने तत्त्वों से भारतीय समाज ही नहीं बल्कि भारतीय साहित्य को भी प्रभावित किया था। हिन्दी साहित्य के अग्रगण्य साहित्य कारों के साहित्य पर 'गांधीवाद' का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है। प्रसाद के संपूर्ण साहित्य पर 'गांधीवाद' का प्रभाव सहज देखा जा सकता है। 'इरावती' उपन्यास में प्रसाद ने गांधीजी के प्रमुख तत्त्व 'मानवता' को एक नए अंदाज में पेश किया है। 'इरावती' में प्रसाद ने जहाँ एक ओर अहिंसा का चित्रण किया है, वहीं दूसरी ओर आत्मज्ञान की आवश्यकता पर भी बल दिया है। प्रसाद के अनुसार मानवता हमेशा उत्थान और पतन के बीच की स्थिति है और उसे ठुकराया नहीं जा सकता। प्रसाद 'इरावती' में भी इसी 'मानवता' की प्रतिस्थापना के लिए प्रायः क्रान्ति करते नजर आते है।

4.3.1.5 कलाप्रेमी

मनुष्य हमेशा से ही कलाप्रेमी रहा है। मनुष्य के जीवन में कला, सौंदर्य और अभिव्यक्ति को अनन्य साधारण महत्त्व है। कला की साधना से मनुष्य को आनन्द की प्राप्ति होती है। कला का एक धरोहर के रूप में सदियों से जतन और संवर्धन किया जा रहा है। भारतीय संस्कृति की झलक हम इन कलाओं में देख सकते है। 'इरावती' उपन्यास की नायिका एक नृत्यांगना है। वह अपनी कला द्वारा ईश्वर तथा लोगों की सेवा करना चाहती

है। मगर इस कला प्रेमी इरावती पर 'विलासिता' फैलाने का आरोप लगाकर उसे बौद्ध विहार में भेज दिया जाता है। विहार में भी अपने आनन्द को वह नृत्य के साथ फैलाना चाहती थी मगर संघ मर्यादा के उल्लंघन में उसे विहार से निकाल दिया जाता है। उपन्यास के अंत में भी वह अपने कलाविष्कार से खारवेल तथा अन्य लोगों का मन मोह लेती है। केवल सेवाभाव ही फैलाना अपने जीवन का लक्ष्य समझने वाली इरावती अंत तक हमें नृत्यमयी दिखाई देती है। 'इरावती' उपन्यास में इरावती की रचना कर प्रसाद ने अपनी कलाप्रियता का परिचय दिया है।

4.3.1.6 **नारी सम्मान**

भारतीय संस्कृति में सदियों से नारी पूजनीय रही है। नारी के प्रति सदैव सम्मानपूर्वक विचारों की अभिव्यक्ति पर बल दिया है। यदि कोई भी नारी की मर्यादा का हनन करता है, तो केवल पुरुष का ही नहीं बल्कि पूरी कायनात का अस्तित्व धोखे में आ जाता है। 'इरावती' उपन्यास में भी नंदवंशीय कालिन्दी भोग-विलास में लिप्त मौर्य सम्राट शतधनुष के शय्यागार में पहुँचा दी जाती है। अपने अपमान से बौखलाकर कालिन्दी मौर्य वंश को खत्म करने का बिड़ा उठाती है और सफल भी होती है। प्रसाद भी नारी को श्रद्धास्थान पर रखते है। उन्होने इस उपन्यास में स्पष्ट किया है कि नारी केवल जननी या सहचर नहीं है, बल्कि वक्त आने पर वह संहारिणी भी बन जाती है।

निष्कर्ष

'इरावती' प्रसाद का ऐतिहासिक उपन्यास है। भले ही इस उपन्यास की कथा अधुरी रह गई है; लेकिन प्रसाद ऐतिहासिक वातावरण का निर्माण करने में सफल रहे है। इसमें ऐतिहासिक पात्रों के साथ-साथ कुछ काल्पनिक पात्रों का निर्माण कर प्रसाद ने कथावस्तु में जान डाल दी है। प्रसाद ने उपन्यास में अतीत का रूपांकन करके युग संस्कृति की झलक दिखाने में कामयाब हुए है। प्रसाद ने अपनी रोचक भाषा और काल्पनिक घटनाओं का सम्मेलन करके इतिहास को जिवंत किया है। यदि 'इरावती' उपन्यास पूरा हुआ होता तो वह हिन्दी के अग्रणी रूमानी उपन्यासों में से एक होता।

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ गद्यकार जयशंकर प्रसाद 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' इन उपन्यासों की रचना करके एक सफल उपन्यासकार के रूप में सिद्ध हुए है। उनके अन्य विधाओं की तरह उपन्यास विधा में भी प्रसाद अपनी अलग छाप छोड़ने में सफल हुए है। इनकी हर एक रचना से पाठकों को 'युग-सन्देश' की प्राप्ति

होती है। प्रसाद ने अपने उपन्यासों में 'आदर्श की प्रतिस्थापना' पर बल दिया है। 'कंकाल' उपन्यास में प्रसाद ने समाज में फैली गंदगी को दर्शाया है, 'तितली' उपन्यास में ग्राम समस्या को उठाया है, तो 'इरावती' उपन्यास के माध्यम से प्रसाद इतिहास में रममाण हुए है। प्रसाद के तीनों उपन्यासों पर गौर करने के बाद हमें यह महसूस होता है कि इनके उपन्यासों का केंद्रिय विषय 'नारी' है। इन उपन्यासों का पूरा ढाँचा 'नारी' विषय पर रखा गया है। उपन्यास में चित्रित सभी सामाजिक, धार्मिक, राजकीय, ग्रामिण हर समस्याओं को 'नारी' के परिप्रेक्ष्य में रखा गया है। प्रसाद ने नारी को हमेशा सम्मानित दर्जा दिया है। इनके उपन्यासों की नारी हमेशा आदर्शवाद का निर्वाह करती नजर आती है। प्रसाद की नारी वह चाहे ग्रामिण हो या शहरी, देशी हो या विदेशी, उच्चभ्रू हो या निम्नवर्ग की, प्रसाद ने सभी वर्ग तथा स्तरों में नारी के दुःख-दर्द, पीड़न को महसूस कर उसे गौरवान्वित किया है। इसीलिए प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' उपन्यासों में चित्रित 'नारी जीवन' पर प्रकाश ड़ालना अत्यावश्यक है। वह पूरे 'नारी-विमर्श' में अपने-आप में एक उपलब्धि साबित होगी।

संक्षिप्त रूप में यहीं कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद मूलतः कवि होते हुए भी केवल ढाई उपन्यास की रचना कर एक सफल उपन्यासकार के रूप में प्रख्यात हुए। प्रसाद ने अपने इन उपन्यासों में नारी को केंद्र में रखते हुए नारी जीवन की व्यथा को, यथार्थ जीवन को, जीवन संघर्ष को, समाज, समाज की सामाजिकता, नारी के प्रति दृष्टिकोण को भारतीय दृष्टि से ऐतिहासिकता के रंग में रंग कर सफलता के साथ प्रस्तुत किया है। इसी लिए इन उपन्यासों का अपना ही अलग महत्त्व है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. रामप्रसाद मिश्र - प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण, पृ. 273
2. जयशंकर प्रसाद - कंकाल, पृ. 59
3. वही, पृ. 104
4. वही, पृ. 109
5. श्रीमती उर्मिला देवी शर्मा - प्रसाद साहित्य और समीक्षा, पृ. 87
6. डॉ. हरिमोहन शर्मा - रचना से संवाद, पृ. 8
7. सं. शम्भुनाथ - राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और प्रसाद, पृ. 270
8. वही, पृ. 291
9. वही, पृ. 271
10. नंददुलारे वाजपेयी - जयशंकर प्रसाद, पृ. 34

11. सं. महावीर अधिकारी - प्रसाद का जीवन-दर्शन, कला और कृतित्व, पृ. 167
12. जयशंकर प्रसाद - तितली, पृ. 258
13. डॉ. अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ, पृ. 141
14. डॉ. हरिमोहन शर्मा - रचना से संवाद, पृ. 7
15. डॉ. स्वर्णलता - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, पृ. 69
16. सं. कृष्णदेव प्रसाद गौड 'बेढब' बनारसी - प्रसाद का साहित्य, पृ. 194
17. डॉ. शम्भुनाथ पाण्डेय - गद्यकार प्रसाद, पृ. 102
18. सं. महावीर अधिकारी - प्रसाद का जीवन दर्शन, कला और कृतित्व, पृ. 17
19. डॉ. कमल कुमारी जौहरी - हिन्दी के स्वच्छन्दतावादी उपन्यास, पृ. 389
20. सुखदेव शुक्ल - हिन्दी उपन्यास का विकास और नैतिकता, पृ. 91
21. लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय' - भारतीय संस्कृति-कोश, पृ. 18-19
22. सुरेश मिश्र - अमर साहित्यकार 'प्रसाद' एक समीक्षात्मक दृष्टि, पृ. 37